ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 27 | दिसम्बर -2025 | अंक - 12 | माउंट आबू | Rs.- 20

ब्रह्मा बाबा के जीवन का जीवंत संदेश तीन शब्दों में...

प्रजापिता ब्रह्माबाबा के जीवन से प्रेरित आध्यात्मिक पुरुषार्थ के तीन स्तम्भ निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। उन्होंने इन तीनों अवस्थाओं को सूक्ष्म रूप से सिर्फ समझा ही नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन का अंग भी बनाया और यूं कहें कि वैसा ही जीया। ये तीन सिर्फ शब्द ही नहीं, बल्कि जीवन को दिव्यता की ओर ले जाने वाला अहम् पुरुषार्थ है। आइये समझते हैं इन तीनों को विस्तार से...

निराकारी स्थिति-आत्मा की मूल पहचान का अनुभव

निराकारी स्थिति का अर्थ है- देह-चेतना (देहभान) से मुक्त होकर आत्मा की स्मृति में स्थित रहना। प्रजापिता ब्रह्माबाबा ने अपने जीवन द्वारा सिखाया कि जब मनुष्य "मैं शरीर नहीं, एक ज्योति बिन्दु आत्मा हूँ" इस स्मृति में स्थित होता है, तो मन, वाणी और कर्म में सहज शान्ति और स्थिरता आ जाती है। पुरुषार्थी जीवन में यह स्थिति सबसे आधारभूत है, क्योंकि इससे मन के विचार शान्त होते हैं और आत्मा परमात्मा से जुड़ पाती है। निराकारी बनने के लिए नियमित अमृतवेला योग, मौन का अभ्यास एवं दिनभर में "मैं आत्मा हूँ" की स्मृति को पुनः जागृत करना आवश्यक है। बीच-बीच में यह अभ्यास करते रहना है। जब यह स्थिति पक्की होती है तो व्यक्ति परिस्थितियों में भी शान्त और समाधान युक्त होता है- यही सच्ची योगयुक्त स्थिति है।

निर्विकारी स्थिति- आत्मा की पवित्रता और श्रेष्ठ दृष्टिकोण

निर्विकारी स्थिति का सम्बन्ध हमारी दृष्टि, वृत्ति और व्यवहार से है। जब मनुष्य विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार) से ऊपर उठता है, तब आत्मा की मौलिक व वास्तविक पवित्रता प्रकट होती है। ब्रह्माबाबा का जीवन इस स्थिति का श्रेष्ठ उदाहरण है- उन्होंने जीवन के प्रत्येक सम्बन्ध को आत्मिक दृष्टि से देखा, सभी के प्रति आत्मिक भाव और शुभ भाव रखा। पुरुषार्थी जीवन में निर्विकारी स्थिति बनाए रखने के लिए संग की मर्यादा, विचारों की स्वच्छता और दृष्टि में आत्मिकता रखना आवश्यक है। निर्विकारिता का अर्थ केवल ब्रह्मचर्य नहीं, बल्कि विचार, शब्द और कर्म तीनों में पवित्रता है। इससे आत्मा की शक्ति और दिव्यता बढ़ती है। जब दृष्टि विकारी नहीं होती तब संसार भी सुंदर प्रतीत होता है- क्योंकि दृष्टिकोण ही हमारी दुनिया को बनाता है।

निरहंकारी स्थिति- सच्ची ईश्वरीय सेवा की पहचान

निरहंकारी स्थिति पुरुषोत्तम बनाने की सबसे ऊंची अवस्था है। ब्रह्माबाबा ने सिखाया कि "मैं कुछ नहीं, सबकुछ शिवबाबा है।" यही निरहंकारी भावना ईश्वरीय यज्ञ की सफलता का मूल कारण बनी। पुरुषार्थी जीवन में जब हम सेवा करते हैं तो अहंकार का सूक्ष्म रूप- जैसे "मैंने किया, मेरे बिना नहीं हो सकता"- धीरे-धीरे आ जाता है। अतः सावधानी यही है कि सदा स्वयं को साधन और शिवबाबा को कर्ता समझें।
निरहंकारी रहने के लिए कृतज्ञता, नम्रता और स्वीकार्यता की भावना रखनी चाहिए। किसी भी सफलता पर "यह शिवबाबा की कृपा है" यह भाव रखें। जब आत्मा इस विनम्रता में रहती है तब ही परमात्मा की शक्ति सहज रूप से उसमें कार्य करती है। यही स्थिति व्यक्ति को पुरुषोत्तम अर्थात् श्रेष्ठ कर्मयोगी बनाती है। निराकारी आत्मा की स्मृति, निर्विकारी दृष्टि की पवित्रता और निरहंकारी सेवा को संयोजन ही ब्रह्माबाबा का सम्पूर्ण जीवन का संदेश है। तीनों अवस्थाओं का अभ्यास करते हुए मनुष्य अपनी चेतना को देह-चेतना से देव-चेतना में परिवर्तित कर सकता है। यही वह मार्ग है जिसे आत्मा, परमात्मा समान बनती है व जीवन सच्चे अर्थों में "स्वर्ग समान" अनुभव होता है।

माननीय प्रधानमंत्री ने ब्रह्माकुमारीज़ नवा रायपुर में "शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड" का किया उद्घाटन

आने वाले समय में ब्रह्माकुमारीज़ विश्व शान्ति के प्रयासों का प्रमुख केन्द्र होगा- माननीय प्रधानमंत्री

नवा रायपुर-छ.ग.। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के नवा रायपुर में नवनिर्मित "शान्ति शिखर एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड रिट्रीट सेंटर" को समाज के नाम समर्पित किया। इस दौरान पी.एम. मोदी ने मेडिटेशन रूम में कुछ समय ध्यान भी लगाया तत्पश्चात् ओमशान्ति के सम्बोधन के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आपने स्वयं को ही नहीं विश्व और ब्रह्मांड में शान्ति के प्रयासों से जोड़ा है। आपका पहला सम्बोधन ही ओमशान्ति है। ओम् अर्थात् ब्रह्म और सम्पूर्ण

ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाओं की अहम भूमिका है।

मोदी ने ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अनुभव किए साझा-

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मेरा तो सौभाग्य रहा है कि मैं बीते कई दशकों से आप सबके साथ जुड़ा हुआ हूँ। मैं यहाँ अतिथि नहीं हूँ, मैं आपका ही हूँ। इस संस्थान से मेरा अपनापन है। खासकर राजयोगिनी ब्र.कु. जानकी दादी का स्नेह, राजयोगिनी ब्र.कु. हृदयमोहिनी जी का मार्गदर्शन यह मेरी जीवन की विशेष स्मृतियों का हिस्सा

ब्रह्मांड। शान्ति अर्थात् शान्ति ही कामना है। इसलिए ब्रह्माकुमारीज़ के विचारों का हर किसी के अंतर्मन पर इतना प्रभाव पड़ता है। विश्व शान्ति की अवधारणा भारत के मौलिक विचारों का हिस्सा है। मैंने हमेशा अनुभव किया है, ब्रह्माकुमारीज़ में शब्द कम, सेवा ज़्यादा है। मैं शान्ति शिखर की संकल्पना में उनके (दादी जानकी) विचारों को साकार होते हुए देख रहा हूँ। राज्य के विकास से देश का विकास, इसी मंत्र पर चलते हुए हम भारत को विकसित बनाने के अभियान में जुटे हैं। विकसित भारत की इस अहम यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्था की अहम भूमिका है। मैंने इस आध्यात्मिक आंदोलन को वटवृक्ष की तरह विशाल होते देखा है।

यहाँ शब्द कम, सेवा ज़्यादा है-

पीएम मोदी ने कहा कि हमारे यहाँ कहा जाता है आचार्य परमोधर्मः, आचार्य परमोतपं, आचार्य परमज्ञानमं, आचार्य किं साध्यते अर्थात् आचरण ही सबसे बड़ा धर्म है, आचरण ही सबसे बड़ा तप है और आचरण ही सबसे बड़ा ज्ञान है। आचरण से क्या कुछ सिद्ध नहीं हो सकता है। बदलाव तब होता है, जब अपनी कथनी को करनी में उतारा जाए और यही ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की आध्यात्मिक शक्ति का स्त्रोत है। जहाँ हर बहनें पहले कठोर तप और साधना में खुद को तपाती हैं। समाज को सशक्त करने में है। मैं बहुत भाग्यवान रहा हूँ। वर्ष 2022 में अहमदाबाद में फ्यूचर ऑफ पॉवर कार्यक्रम हो, वर्ष 2012 में संस्थान की स्थापना के 75 वर्ष हो या 2013 में प्रयागराज के कार्यक्रम हो, आबू जाना हो या गुजरात में किसी कार्यक्रम में जाना हो यह तो बहुत रुटीन सा हो गया था। दिल्ली आने के बाद आज़ादी के अमृत महोत्सव से जुड़ा अभियान हो, स्वच्छ भारत अभियान या जल-जन अभियान इन सबसे जुड़ने का मौका हो मैं जब भी आपके बीच आया हूँ, आपके प्रयासों को बहुत गंभीरता से देखा है।

दुनिया के हर देश में ब्रह्माकुमारीज़ के लोग मिले

मोदी ने कहा कि प्रधानमंत्री बनने क बाद दुनिया

-शेष पेज 3 पर...